Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – CSE

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर I – भाग – 2

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत

SIERRA INNOVATIONS

भाग 2

प्राचीन एवं मध्यलाकीन भारत

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत** • पुरातत्व स्रोत • साहित्यिक स्रोत	**1** 1 2
2.	**पाषाण युग** • पुरापाषाण काल (Paleolithic Age) • मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age) • नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल	**5** 5 7 8
3.	**ताम्र पाषाणिक काल(3000 500BC)** • विशेषताएं • महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण संस्कृतियां और उनकी विशेषताएं • महापाषाण (मेगालिथ)	**9** 9 10 11
4.	**सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)** • सिंधु घाटी सभ्यता की खोज • हड़प्पा सभ्यता के चरण • हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल • सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं • सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	**13** 13 13 14 15 19
5.	**वैदिक काल (1500 600BC)** • वैदिक साहित्य • प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व 1000 ईसा पूर्व) • उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व 600 ईसा पूर्व)	**20** 20 22 23
6.	**बौद्ध धर्म और जैन धर्म** • उत्पत्ति के कारण • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • अन्य नास्तिक संप्रदाय	**27** 27 27 37 44
7.	**महाजनपद काल (600 300 BC)** • महाजनपद • मगध के उदय के कारण • हरण्यक राजवंश • शिशुनाग राजवंश • नंद राजवंश • महाजनपद के युग में सामाजिक और भौतिक जीवन • महाजनपद के युग के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था • कानूनी और सामाजिक व्यवस्था • विदेशी आक्रमण	**45** 45 47 48 48 48 49 49 49 49

8.	**मौर्य सम्राजय** • भौगोलिक विस्तार • मौर्य साम्राज्य के इतिहास के स्रोत • मौर्य राजवंश • मौर्य प्रशासन • मौर्य अर्थव्यवस्था • मौर्यकालीन समाज	**51** 51 51 54 56 58 59
9.	**मौर्योत्तर काल** • मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण • इंडो यूनानी/बैक्ट्रियन यूनानी • शक / सीथियन • सीथो पार्थियन/ शक पहलव • कुषाण/ यूची/ टोर्चियन • मध्य एशियाई घुसपैठ का कालक्रम • मध्य एशियाई संपर्कों का प्रभाव • स्वदेशी शासक राजवंश	**60** 60 61 61 61 62 63 63 64
10	**संगम युग** • प्रारंभिक पांड्या साम्राज्य • चोल • चेर साम्राज्य • संगम युग के दौरान जीवन • संगम साहित्य	**67** 68 68 69 69 70
11.	**गुप्त युग** • गुप्त काल के अध्ययन के स्रोत • गुप्ता वंश के शासक • गुप्त प्रशासन • गुप्त कला और वास्तुकला • गुप्त साम्राज्य का पतन	**72** 72 72 73 75 77
12.	**दक्कन के वकटक** • विंध्यशक्ति प्रथम • प्रवरसेन	**78** 78 78
13.	**गुप्तोत्तर काल** • क्षेत्रीय विन्यास का युग • उत्तर भारत के शासक राजवंश	**79** 79 79
14	**पूर्व मध्यकालीन भारत (750 1200 AD)** • मध्यकालीन युग • भारतीय सामंतवाद • गुर्जर प्रतिहार • बंगाल के पाल शासक • राष्ट्रकूट • त्रिपुरी की चेदि (कलचुरी) • बंगाल के सेन • पश्चिमी गंग • पूर्वी गंग • कश्मीर का इतिहास	**87** 87 87 88 90 92 94 95 95 96 97

	○ कर्कोट राजवंश	97
15.	**चोल साम्राज्य (850 1200 ईस्वी)** • उत्पत्ति • इतिहास के स्रोत • राजनीतिक इतिहास • प्रशासनिक संरचना • कला और वास्तुकला • अर्थव्यवस्था • समाज • कल्याणी के चालुक्य • चोल चालुक्य युद्ध • चोल साम्राज्य का अंत	**99** 99 99 99 101 102 103 103 104 106 106
16.	**संघर्ष का युग** • देवगिरी के यादव • वारंगल के काकतीय • द्वारसमुद्र के होयसाल • राजपूत राज्य	**107** 107 107 107 109
17.	**अरब आक्रमण** • अरब आक्रमण के प्रमुख कारण • सिंध की अरब विजय • गजनवी • भारत में तुर्की के आक्रमण की सफलता के कारण	**113** 113 113 113 116
18.	**दिल्ली सल्तनत** • गुलाम/इल्बारी राजवंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैय्यद वंश • लोदी राजवंश • दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, आर्थिक और सामाजिक जीवन • दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण	**118** 118 120 121 124 124 125 127
19.	**विजयनगर और बहमनी साम्राज्य** • विजयनगर साम्राज्य • संगम वंश • सलुव वंश • तुलुव वंश • अराविदु राजवंश • बहमनी सल्तनत • दक्कन सल्तनत	**128** 128 128 129 130 131 134 137
20.	**मुगल साम्राज्य** • बाबर (1526 1530 ई.) • हुमायूँ (1530 1540ई.) • सूर साम्राज्य (1540 1555 ई.) • अकबर (1556 1605ई.) • जहाँगीर (1605 1627 ई.) • शाहजहाँ (1628 1658 ई.)	**139** 140 141 142 143 149 150

	• औरंगजेब (1658 1707 ई.) • मुगल साम्राज्य का पतन	151 152
21.	**मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य** • मराठों का उदय • शाहजी भोंसले • शिवाजी भोंसले • संभाजी • राजाराम • शाहू • राजाराम द्वितीय • पेशवा	**155** 155 155 156 157 158 158 158 158
22.	**मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन** • मध्यकालीन भारत में दर्शन • भक्ति आंदोलन • सूफीवाद • सिख धर्म • भारत के लिए महत्वपूर्ण विदेशी यात्री	**167** 167 168 174 177 179

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

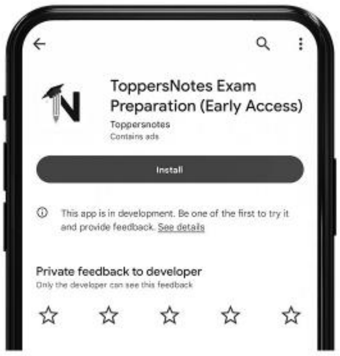

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

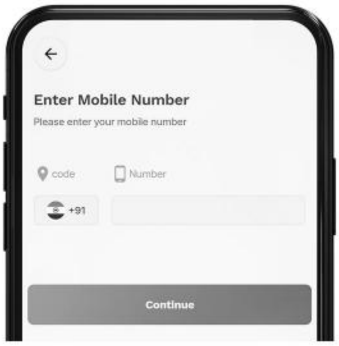

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

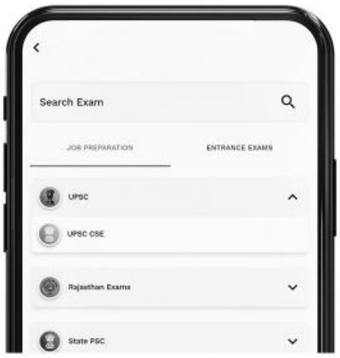

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

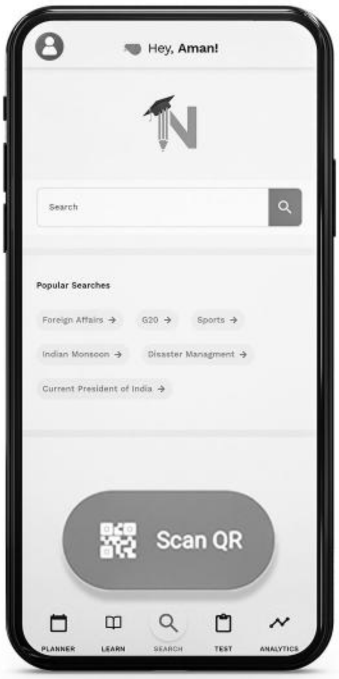

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

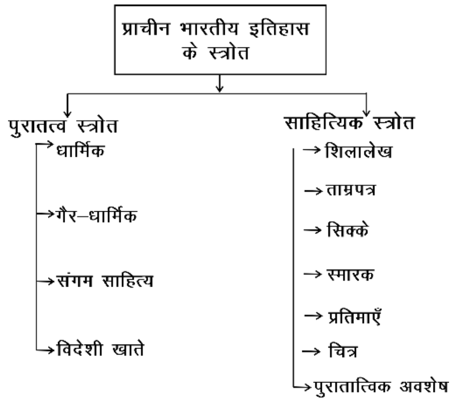

A. पुरातत्व स्रोत

- **मुद्राशास्त्र** - सिक्कों का अध्ययन।
- **पुरालेख**- अभिलेखों का अध्ययन।
- **पुरातत्व** = 'पुरालेख' + 'लोगिया' (पुरातन = प्राचीन और लोगिया = ज्ञान)।

1. शिलालेख / एपिग्राफ

- पुरातत्व स्रोतों का **सबसे महत्वपूर्ण, प्रामाणिक और विश्वसनीय हिस्सा।** तुलनात्मक रूप से कम पक्षपाती।
- **सबसे पुराने शिलालेख** - सम्राट अशोक- प्रमुख रूप से **ब्राह्मी लिपि में।**
- **अन्य महत्वपूर्ण शिलालेख –**

नाम	स्थान	वर्णन
नागनिका का शिलालेख	नानेघाट, **महाराष्ट्र**	सातवाहन राजा **सतकर्णी के बारे में**
नासिक शिलालेख	नासिक गुफाएँ, **महाराष्ट्र**	गौतमीपुत्र **सतकर्णी के बारे में**
प्रयाग प्रशस्ति/इलाहाबाद स्तंभ	इलाहाबाद, **उत्तर प्रदेश**	**समुद्रगुप्त के बारे में** हरिसेन द्वारा संस्कृत में लिखा गया
ऐहोल शिलालेख	**कर्नाटक**	बादामी के **चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय** के बारे में रविकीर्ति द्वारा लिखा गया।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरि, **ओडिशा**	**राजा खारवेल** के बारे में

2. ताम्र - पत्र

- **'भूमि-अनुदान' के लिए उत्कीर्ण** और अनुदानग्राही को जारी किया गया।
- **ताँबे की** 3 **प्लेटें**, ताँबे की गाँठ के माध्यम से एक-दूसरे से बंधी हुई।
- **ऊपरी और अंतिम भागों को उकेरा नहीं गया है** क्योंकि ये समय के साथ धुंधले हो जाते हैं।
- उस काल की **सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी** देता है।
- **उदा**. सोहगौरा ताम्रलेख हमें गंभीर सूखे और भोजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए अधिकारियों द्वारा किए गए उपायों के बारे में सूचित करता है।

3. सिक्के

- **व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों** और **आर्थिक और तकनीकी विकास** के बारे में सूचित करता है।
- उल्लिखित तिथियाँ हमें **राजाओं के कालक्रम** के बारे में जानने में मदद करती हैं।
- **भारत के पहले सिक्के** - **'पंचमार्क** सिक्के' आहत / पंचिंग विधि से बनाए गए।
- **संभवतः व्यापारिक संघों द्वारा** चलाए गए थे - किसी **शासक द्वारा नहीं।**
- **सिक्कों** में **शुद्धता** का अनुपात **शासक की आर्थिक स्थिति** और उसके समय की व्याख्या करता है।
- **पहला सोने का सिक्का** - **इंडो-यूनानियों द्वारा** जारी किया गया ।
- **कुषाणों** द्वारा **शुद्धतम सोने के सिक्के** जारी किये गए ।
- **सबसे** ज्यादा लेकिन **अशुद्ध सोने** के **सिक्के गुप्तों द्वारा** जारी किये गए।

4. स्मारक

- इनका अध्ययन हमें **तकनीकी कौशल, जीवन स्तर, आर्थिक स्थिति** और उस **समय की स्थापत्य** शैली की **व्याख्या** करने में मदद **करता है।**
- **शासको** या **राजवंशो** की **समृद्धि का चित्रण** करता है।
- **3 प्रमुख शैलियाँ-**
    - उत्तर में **नागर शैली**।
    - दक्षिण में **द्रविड़ शैली**।
    - दक्कन में **वेसर शैली**।

Unleash the topper in you

5. प्रतिमाएँ

- **हड़प्पा मूर्तिकला -** पत्थर, स्टीटाइट, मिट्टी, टेराकोटा, चूना, कांसे, हाथी दांत, लकड़ी आदि से बनी ।
    - **उपयोग** - मूर्तियाँ, खिलौने, मनोरंजन ।
- **कांस्य प्रतिमाएँ** (हड़प्पा सभ्यता) और **खिलौने** (दैमाबाद)
- **मौर्यकालीन मूर्तियाँ - दीदारगंज** की **यक्षी** - लोगों की समसामयिक संपन्नता और सौन्दर्य बोध।
- **कनिष्क की मूर्ति**- राजा की **विदेशी उत्पत्ति** और **विदेशी** शैली की **पोशाक**, जैसे जूते, ओवरकोट आदि।

6. चित्र

- **चित्रों के प्रारंभिक उदाहरण- भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) - मध्य पाषाण काल के गुफा-निवासियों द्वारा आसपास की प्रकृति के रंगों और औजारों का उपयोग करके बनाए गए ।
- **अजंता चित्रकला** - धार्मिक विचारधारा, आध्यात्मिक शांति, आभूषण, वेशभूषा, विदेशी आगंतुकों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।
- **चोल चित्रकला - चोल राजव्यवस्था** के **'दिव्य राजत्व' की अवधारणा** को प्रदर्शित करती हैं।

7. पुरातत्व अवशेष

(i) मृदभांड

- **आद्य-इतिहास से प्रारंभिक मध्य काल** तक मुख्य उपकरण।
- **विभिन्न वस्तुओं से बने** जैसे कटोरे, प्लेट, बर्तन आदि में।
- **संस्कृति**, **आकार**, **वस्त्र**, **सतह-उपचार** (वस्त्र, रंग, डिजाइन, पेंटिंग), मृदभांड बनाने की **तकनीक** आदि के **अनुसार विभेदित।**
- **विशिष्ट संस्कृति**/अवधि के लिए **विशिष्ट मृदभांड** समर्पित किये गए है।

(ii) मणिकाएँ

- **विभिन्न सामग्रियों**, जैसे, पत्थर, अर्द्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट, कैल्सेडनी, क्रिस्टल, फ़िरोज़ा, लैपिस-लाजुली), कांच, टेरा कोटा, हाथीदांत, खोल, धातुओं जैसे सोना, तांबा आदि **से बने** ।
- **विभिन्न आकार** जैसे गोल, चौकोर, बेलनाकार, बैरल के आकार **के** ।
- एक **विशिष्ट अवधि** के **तकनीकी विकास** और **सौंदर्यबोध** को जानने **के लिए एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल** किए जा सकते हैं।

(iii) जीव अवशेष/हड्डियाँ

- **उत्खनन** से **बड़ी मात्रा** में **हड्डियों** या **जीवों अवशेषों** का पता चला है।
- वे उस **विशेष स्थल के आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रकाश** डालते हैं।
- **संबंधित लोगों** की **आहार संबंधी आदतों को समझने में मदद** करते हैं।

(iv) पुष्प अवशेष

- **संबंधित लोगों** की **ऐतिहासिक पारिस्थितिकी** और **आहार संबंधी आदतों** के बारे में **जानकारी** देते हैं।

B. साहित्यिक स्रोत

1. धार्मिक स्रोत

- **आधार स्रोत**: ब्राह्मण ग्रंथ जैसे वैदिक ग्रंथ, सूत्र, स्मृति, पुराण और महाकाव्य।

वैदिक ग्रंथ	• **ऋग्वेद- सबसे पुराना** - हमें ऋग्वैदिक समाज के बारे में बताता है। • **साम वेद**, **यजुर्वेद** और **अथर्ववेद - उत्तर वैदिक काल** के समाज **के बारे में** जानकारी देता है। • **900 साल (1500B.C-600B.C) का इतिहास** बनाता है । • **आर्यों** की उत्पत्ति, उनकी राजनीतिक संरचना, उनके समाज, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक उपलब्धियों आदि **के बारे में जानकारी देता है।**
सूत्र	• सूत्र में पिरोए गए सुन्दर मोतियों की तरह **शब्द या स्तोत्र का संकलन**। • **वैदिक काल की जानकारी** देता है। • **छह भाग**: शिक्षा, व्याकरण, छंद, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष
उपवेद	• **आयुर्वेद** - चिकित्सा विज्ञान से संबंधित - ऋग्वेद का उपवेद। • **गंधर्व वेद** - संगीत से संबंधित- सामवेद का उपवेद। • **धनुर वेद** - युद्ध कौशल, हथियार और गोला-बारूद से संबंधित- यजुर्वेद का उपवेद। • **शिल्प वेद** - मूर्तिकला और वास्तुकला से संबंधित - अथर्ववेद का उपवेद।

स्मृति ग्रंथ	● **मनुस्मृति** - सबसे पुराना स्मृति पाठ (200B.C- 200A.D)। ● **याज्ञवल्क्य स्मृति** (100A.D - 300A.D) के बीच संकलित। ● **नारद स्मृति** (300A.D-400A.D) और **पाराशर स्मृति** (300A.D-500A.D) - गुप्तों की सामाजिक और धार्मिक स्थितियों के बारे में जानकारी देता है।
बौद्ध साहित्य	● **पिटक** - **सबसे पुराने** बौद्ध ग्रंथ। ○ भगवान **बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद** संकलित। ○ **3 प्रकार**- ■ **सुत्त पिटक**- धार्मिक विचारधारा और बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं। ■ **विनय पिटक**- बौद्ध संघ के नियम शामिल हैं। ■ **अभिधम्म पिटक**- बौद्ध दर्शन शामिल हैं। ● **जातक कथाएँ** - भगवान **बुद्ध के पिछले जन्म से संबंधित उपाख्यान** - संकलन पहली शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था लेकिन वर्तमान रूप दूसरी शताब्दी ईस्वी में संकलित किया गया था। ● **मिलिंदपन्हो** - बौद्ध ग्रंथ - ग्रीक शासक **मिनांडर (मिलिन्द) और बौद्ध संत नागसेना के बीच दार्शनिक संवाद** के बारे में जानकारी देता है। ● **दिव्यावदान** - **चौथी शताब्दी ईस्वी** में पूर्ण रूप से लिखा गया - **विभिन्न शासकों** के बारे में जानकारी। ● **आर्यमंजुश्रीमुलकल्प** - बौद्ध दृष्टिकोण से **गुप्त साम्राज्य के विभिन्न शासकों के बारे में** जानकारी। ● **अंगुत्तरनिकाय** - **सोलह महाजनपदों के नाम** देता है।
सिंहली ग्रंथ	● इसमें **दीपवंश** और **महावंश** - बौद्ध ग्रंथ शामिल हैं। ● **दीपवंश** – 4वी शताब्दी ई. ● **महावंश** - 5वीं शताब्दी ई. ● उस समय के **सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी** प्रदान करता है। ● **भारत और विदेशी राज्यों के सांस्कृतिक संबंधों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
जैन ग्रंथ	● **मुख्य ग्रंथ**- आगम ग्रंथ। ● **कुल ग्रंथ**- 12 । ● **आचारंगसूत्र** - आगम ग्रंथ का हिस्सा - **महावीर की शिक्षाओं** पर आधारित है और जैन संतों के आचरण के बारे में बात करता है। ● **व्याख्या प्रज्ञापति / भगवती सूत्र** - **महावीर के जीवन** के बारे में । ● **नयाधम्मकहा** - भगवान **महावीर की शिक्षाओं** का संकलन। ● **भगवतीसूत्र** - 16 **महाजनपदों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है। ● **भद्रबाहुचरित** - जैन आचार्य **भद्रबाहु** और **चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर प्रकाश** डालता है। ● **परिशिष्टपर्वन** - सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ - **हेमचंद्र द्वारा** 12 **वीं शताब्दी ईस्वी** में लिखा गया।
पुराण	● **स्मृति के बाद संकलित।** ● मुख्य रूप से 18 । ● **प्राचीन पुराण** - मार्कंडेय पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण। ● **बाकी बाद में बनाए गए थे।** ● **मत्स्य**, **वायु** और **विष्णु पुराणों** में प्राचीन **भारतीय राजवंशों की जानकारी** मिलती हैं । ● **महाभारत के युद्ध के बाद** शासन करने वाले राजवंशों **का एकमात्र उपलब्ध स्रोत।** ● **विभिन्न राजवंशों** और **उनके पदानुक्रम** (निम्नतम से उच्चतम तक) **का कालक्रम** प्रदान करता है**।**
महाकाव्य	● **ब्राह्मण ग्रंथों** का एक **हिस्सा** ● **सबसे महत्वपूर्ण**- **महाभारत** और **रामायण।** ● **रामायण** - **वाल्मीकि** द्वारा रचित - मौर्य काल के बाद। ● **महाभारत** - **वेद व्यास** द्वारा रचित - गुप्त काल में पूरा हुआ - **शुरू में** नाम **जय संहिता** / **भारत** रखा गया।

2. गैर-धार्मिक स्रोत

- **समाज के** लगभग सभी **पहलुओं पर प्रकाश** डालता है ।
- **कुछ गैर-धार्मिक ग्रंथ** हैं -
  - **पाणिनि की अष्टाध्यायी** - भारत का **सबसे पुराना व्याकरण**/साहित्य - **मौर्य-पूर्व** काल की राजनीतिक**,** सामाजिक और धार्मिक **स्थिति की जानकारी।**
  - **मुद्राराक्षस**- **विशाखदत्त** द्वारा लिखित- **मौर्य काल के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
  - **अर्थशास्त्र** - **कौटिल्य** / विष्णुगुप्त / चाणक्य द्वारा लिखित - 15 **भागों में विभाजित** - भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, मौर्य युग की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

- **पतंजलि का महाभाष्य** और **कालिदास का मालविकाग्निमित्रम** - **'शुंग वंश'** के बारे में जानकारी।
- **वात्स्यायन का कामसूत्र** - सामाजिक जीवन, शारीरिक संबंध, पारिवारिक जीवन आदि की जानकारी प्रदान करता है।
- **शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्'** और **दण्डिन का 'दशकुमारचरित'** - उस काल के सामाजिक जीवन की जानकारी प्रदान करता है।

3. संगम साहित्य

- **प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य**।
- **इकट्ठे हुए कवियों द्वारा** निर्मित (संगम)।
- **डेल्टाई तमिलनाडु** में रहने वाले लोगों के **सामाजिक**, **आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन के बारे में** बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।
- इसमें **'सिलप्पादिकारम'** और **'मणिमेकलई' शामिल** हैं।

संगम साहित्य

संगम साहित्य	लेखक	विषय / प्रकृति / संकेत
अगत्तीयम	अगस्त्य	अक्षरों के व्याकरण पर एक कार्य
तोल्काप्पियम (तमिल व्याकरण)	तोलकापियार	व्याकरण और कविता पर एक ग्रंथ
एट्टुकाई	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पट्टुपट्टू	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पेटिनेंकिलकनक्कू (18 लघु कार्य)	-	एक उपदेशात्मक कार्य
कुरल (मुप्पाल)	तिरुवल्लुवर	राजनीति, नैतिकता, सामाजिक मानदंडों पर एक ग्रंथ
शिलप्पादिकारम	इलांगो आदिगल	कोवलन और माधवी की एक प्रेम कहानी
मणिमेकलई	सीतलै सत्तनार	मणिमेकलई का साहसिक कार्य
सिवाका चिंतामणि	तिरुत्तकरदेव	एक संस्कृत ग्रंथ
भारतम	पेरुदेवनार	अंतिम महाकाव्य
पन्निरुपदलम (व्याकरण)	अगस्त्य के 12 शिष्य	पुरम साहित्य पर एक व्याकरणिक कार्य

4. विदेशी खाते

- **ग्रीक**, **रोमन**, **चीनी** और **अरब यात्रियों** के लेखन से मिलकर बने है।
- **राजनीतिक** और **सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश** डालते है।
- **ग्रीक या रोमन लेखक -**
  - **हेरोडोटस**-
    - **विश्व के प्रथम इतिहासकार** माने जाते हैं।
    - **फारसियों की तरफ से लड़ने वाले भारतीय सैनिकों का उल्लेख** किया।
  - **मेगस्थनीज**-
    - **सेल्यूकस निकेटर के राजदूत,** चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में तैनात।
    - **कार्य** - **इंडिका** - **पाटलिपुत्र** के नक्शे **का विवरण** देता है।
    - **सामाजिक संरचना**, **जाति-व्यवस्था**, **जाति-संबंध** आदि के ऊपर **उल्लेख।**
    - मूल इंडिका खो गई है।
  - **एरिथ्रियन सागर का पेरिप्लस**-
    - इसे कथित तौर पर **मिस्र के तट पर** एक **मछुआरे ने लिखा** था।
    - **प्रारंभिक ऐतिहासिक काल** के दौरान **भारत-रोमन व्यापार** पर निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ **जानकारी** देता है।
    - **भारत के तट-रेखा पर बंदरगाहों**, **भारत** में **व्यापार केंद्रों, व्यापार-मार्गों** और बंदरगाहों को जोड़ने, **केंद्रों के बीच** की **दूरी**, **व्यापार** की **वस्तुओं**, **व्यापार** की वार्षिक **मात्रा**, **जहाजों के प्रकार** आदि **के बारे में** सूचित करता है।
- **चीन**
  - **फाह्यान** (**फा जियान**)-
    - **गुप्त काल के दौरान** भारत आए।
    - **बौद्ध भिक्षु** - देवभूमि (अर्थात् भारत) से ज्ञान प्राप्त करने और बौद्ध तीर्थ केन्द्रों का दौरा करने के लिए भारत आए।
  - **ह्वेनसांग** (**जुआन जांग**)-
    - **हर्षवर्धन के** शासनकाल के **दौरान** भारत का दौरा किया।
    - **बौद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण** किया, **नालंदा विश्वविद्यालय में ठहरे।**
    - **बौद्ध धर्म का अध्ययन किया**, मूल बौद्ध रचनाएँ पढ़ीं, मूल पांडुलिपियाँ और स्मृति चिन्ह एकत्र किए, प्रतियां बनाईं, **हर्ष की सभा में भाग लिया।**
    - चीन में, **उन्होंने 'सी-यू-की'** (पश्चिमी क्षेत्रों पर ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स) **लिखा** - भारत में उनके अनुभव का विशद विवरण डेटा हैं।
    - **राजाओं विशेष रूप से हर्ष** और उनकी उदारता, भारत में लोगों और विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाजों, जीवन शैली आदि **की जानकारी** देता है।
- **अन्य क्रॉनिकल्स -**
  - **तारानाथ** (तिब्बती बौद्ध भिक्षु) द्वारा **कंग्यूर** और **तंग्यूर - प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का लेखा-जोख**

2 CHAPTER पाषाण युग

- **प्रागैतिहासिक काल - कोई लिखित प्रमाण नहीं।**
- **सूचना का मुख्य स्रोत**- पुरातात्विक उत्खनन।
- **पल्लवरम हैंडैक्स** - भारत में **पहला पुरापाषाण उपकरण** - रॉबर्ट ब्रूस फूट (1863 ईस्वी) द्वारा खोजा गया - उन्होंने दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में पूर्व-ऐतिहासिक स्थलों की भी खोज की ।
- यह काल **मानव सभ्यता का प्रारम्भिक काल** माना जाता है।
- इस काल को **तीन भागों में विभाजित** किया जा सकता है
  1. **पुरा पाषाण काल** (Paleolithic Age)
  2. **मध्य पाषाण काल** (Mesolithic Age)
  3. **नव पाषाण काल** अथवा उत्तर पाषाण काल (Neolithic Age)

1. पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)

- यूनानी भाषा में Palaios प्राचीन एवं Lithos पाषाण के अर्थ में प्रयुक्त होता था।
- यह काल **आखेटक एवं खाद्य-संग्रहण काल के रूप में** भी **जाना जाता** है।
- अभी तक **भारत में पुरा पाषाणकालीन मनुष्य के अवशेष** कहीं से भी **नहीं मिले हैं**, जो भी अवशेष के रूप में मिला है, वह उस समय प्रयोग में लाये जाने वाले पत्थर के उपकरण हथियार हैं।
- **प्राप्त उपकरणों के आधार पर** यह अनुमान लगाया है कि ये लगभग **2,50,000 ई.पू.** के होंगे।
- हाल में **महाराष्ट्र के 'बोरी' नामक स्थान पर की गई खुदाई में मिले अवशेषों** से ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि इस पृथ्वी पर **'मनुष्य' की उपस्थिति लगभग 14 लाख वर्ष पुरानी** है।
- **गोल पत्थरों से बनाये गये प्रस्तर उपकरण** मुख्य रूप से **सोहन नदी घाटी में मिलते हैं।**
- **सामान्य पत्थरों के कोर तथा फ़्लॅक्स प्रणाली द्वारा बनाये गये** औजार मुख्य रूप से मद्रास, वर्तमान चेन्नई में पाये गये हैं।
- इन दोनों प्रणालियों से निर्मित **प्रस्तर के औजार सिंगरौली घाटी, मिर्ज़ापुर एवं बेलन घाटी, प्रयागराज में मिले** हैं।
- **मध्य प्रदेश के भोपाल के पास भीम बेटका में मिली पर्वत गुफायें** एवं शैलाश्रय भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- इस समय के मनुष्यों का जीवन **पूर्णरूप से शिकार पर निर्भर** था।
- वे **अग्नि के प्रयोग से अनभिज्ञ** थे। **सम्भवतः** इस समय के **मनुष्य नीग्रेटो जाति के थे।**
- **भारत में पुरापाषाण युग को औजार-प्रौद्योगिकी के आधार पर तीन अवस्थाओं** में **बांटा जाता हैं-**

काल	अवधि	अवस्थाएं
निम्न पुरापाषाण काल	100,000 ई.पू.	हस्तकुठार और विदारण उद्योग
मध्य पुरापाषाण काल	100,000 ई.पू. 40,000 ई.पू.	शल्क (फ़्लॅक्स) से बने औज़ार
उच्च पुरापाषाण काल	40,000 ई.पू. 10,000 ई.पू.	शल्कों और फ़लकों (ब्लेड) पर बने औजार

A. निम्न पुरा पाषाण काल

- **विशेषताएं:**
  - **अधिकतम समय अवधि** (पूरे निम्न प्लीस्टोसिन और मध्य प्लीस्टोसिन युग की अधिकतम अवधि को कवर करता है)।
  - **नदी घाटियों का निर्माण** ।
  - **प्रारंभिक पुरुष जल स्रोत के पास रहना पसंद करते थे**, क्योंकि पत्थर के हथियार/उपकरण मुख्य रूप से नदी घाटियों में या उसके आस-पास पाए जाते हैं।
  - **मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप** और **अफ्रीका में** फैला हुआ ।
  - **प्रारंभिक पत्थर के औजारों के साक्ष्य** - पश्चिमी यूरोप - निम्न प्लीस्टोसिन में पहले अंतर-हिमनद चरण के निक्षेप ।
  - **खानाबदोश जीवन** शैली जीते थे।
  - **शिकारी** और भोजन **संग्रहकर्ता।**
  - **निएंडरथल** जैसे पैलेंथ्रोपिक पुरुषों का योगदान (होमिनिड/मानवनुमा विकास का तीसरा चरण)
  - **सबसे पुराने निम्न पुरापाषाण स्थलों** में से एक **महाराष्ट्र में बोरी** है।
- **उपकरण:**
  - **उपकरण- चूना पत्थर से बने** - हाथ की कुल्हाड़ी, चॉपर और क्लीवर - खुरदरे और भारी।
  - **पहले पाषाण औजारों के निर्माण** को ओल्डोवन परंपरा के रूप में जाना जाता था।

- **प्रमुख स्थल:**
  - सोन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान में)
  - थार रेगिस्तान
  - कश्मीर
  - मेवाड़ का मैदान
  - सौराष्ट्र
  - गुजरात
  - मध्य भारत
  - दक्कन का पठार
  - छोटानागपुर पठार
  - कावेरी नदी का उत्तरी भाग
  - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी

दो महत्वपूर्ण संस्कृतियां -

- **सोहन संस्कृति:**
  - **सिंधु की** एक **सहायक नदी सोहन** नदी के नाम **पर**।
  - **स्थल**-उत्तर-पश्चिम भारत और पाकिस्तान में शिवालिक पहाड़ियाँ।
  - **निम्न पुरापाषाणकालीन पत्थर के औजार** मिले।
  - **पशु अवशेष** - घोड़ा, भैंस, सीधे दांत वाला हाथी और दरियाई घोड़ा।
  - **कंकड़ उपकरण** और **चॉपर के निक्षेप** मिले।
- **एचुलियन संस्कृति / मद्रासी संस्कृति:**
  - **फ्रांसिसी स्थल सेंट अचेउल के नाम पर।**
  - **भारतीय उपमहाद्वीप का पहला प्रभावी उपनिवेशीकरण।**
  - **भारत में निम्न पुरापाषाणकालीन बस्तियों के समान।**
  - **हैण्ड-एक्स** और **क्लीवर के भंडार**

B. मध्य पुरापाषाण काल

- **विशेषताएं-**
  - मुख्य रूप से **मनुष्य के प्रारंभिक रूप- निएंडरथल से जुड़ा हुआ** है।
  - **आग के उपयोग के साक्ष्य।**
  - **मध्य पुरापाषाण काल** का **मनुष्य मेहतर** था, लेकिन **शिकार** और **संग्रहण के बहुत कम साक्ष्य** मिले हैं।
  - **दफनाने से पहले मृतकों को चित्रित** किया जाता था।
  - कुछ उपकरण प्रकारों का त्याग कर और उपकरण निर्माण की नई तकनीकों को शामिल करके **ऐचुलियन संस्कृति में धीमा परिवर्तन हुआ।**
- **उपकरण -**
  - **छोटे, पतले और हल्के उपकरण।**
  - **मुख्य रूप से** बोर, पॉइंट और स्क्रेपर्स आदि बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले **फलैक्स पर निर्भर।**
  - **इस अवधि में कंकड़ उद्योग भी देखा जा सकता है।**
  - खोजे गए पत्थर बहुत छोटे / **सूक्ष्म पाषाण** थे।
  - **क्वार्टजाइट**, **क्वार्ट्ज** और **बेसाल्ट** की जगह **चर्ट** और **जैस्पर** जैसे महीन दाने वाली सिलिकाम शैलों ने ले ली।
  - **मध्य भारत और राजस्थान में कई जगहों पर** टूल फैक्ट्रियाँ **पाई जाती है**।
  - इस युग की **अधिकांश विशेषताएं निम्न पुरापाषाण काल के समान** हैं ।
- **महत्वपूर्ण स्थल:**
  - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी
  - लूनी घाटी (राजस्थान)
  - सोन और नर्मदा नदियाँ
  - भीमबेटका
  - तुंगभद्रा नदी घाटियाँ
  - पोटवार पठार (सिंधु और झेलम के बीच)
  - संघो गुफा (पेशावर, पाकिस्तान के पास)

C. उच्च पुरापाषाण काल

- **विशेषताएँ** -
  - **होमो सेपियन्स की उपस्थिति।**
  - **कला** और **रीति-रिवाजों को दर्शाने वाली मूर्तियों** और **अन्य कलाकृतियों की** व्यापक **उपस्थिति।**
  - **राजस्थान**, **मध्य प्रदेश** और **महाराष्ट्र** में **40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्को की खोज**
  - **ऊंचाई** पर और **उत्तरी अक्षांशों में अत्यधिक ठंडी** और **शुष्क जलवायु।**
  - **उत्तर पश्चिम भारत** में **मरुस्थलों का व्यापक निर्माण**
  - **पश्चिमी भारत के जल** अपवाह तंत्र लगभग खत्म हो गए और नदी के **जलमार्ग** "पश्चिम की ओर" स्थानांतरित हो गए।
  - **वनस्पति आवरण** में **कमी।**
    मानव आबादी को जंगली खाद्य संसाधनों का सामना करना पड़ा- यही कारण है कि ऊपरी पुरापाषाण स्थल शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में बहुत सीमित हैं।

- **उपकरण** -
  - **हड्डी के औज़ार** - सुई, मछली पकड़ने के उपकरण, हार्पून, ब्लेड और बरिन उपकरण।
  - **तकनीकों के शोधन और तैयार उपकरण रूपों के मानकीकरण** के संबंध में एक चिह्नित क्षेत्रीय विविधता देखने को मिली।
  - **ग्राइंडिंग स्टैब्स** भी पाए - उपकरण उत्पादन की तकनीक में प्रगति।
- **प्रमुख स्थल:**
  - भीमबेटका (भोपाल के दक्षिण में) - हाथ की कुल्हाड़ी और क्लीवर, ब्लेड, खुरचनी यहाँ पाए गए हैं।
  - बेलन
  - सोन
  - छोटा नागपुर पठार (बिहार)
  - महाराष्ट्र
  - ओडिशा
  - आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट
  - अस्थि औज़ार केवल आंध्र प्रदेश में कुरनूल और मुच्छतला चिंतामणि गवी की गुफा स्थलों पर पाए गए है

2. मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age)

- **ग्रीक शब्दों से व्युत्पन्न - 'मेसो' और 'लिथिक'** उर्फ 'मध्य पाषाण युग'।
- **यह होलोसीन युग** से सम्बन्धित ।
- **पैलियोलिथिक** और **नवपाषाण काल के बीच संक्रमणकालीन अवधि** ।
- **विशेषताएँ** -
  - गर्मियों में भारी वर्षा और सर्दियों में मध्यम वर्षा वाली **गर्म जलवायु**।
  - शुरू में **शिकारी** और **संग्रहणकर्ता** , लेकिन **बाद में पशुपालन** और **खेती** करने लगे ।
  - **आदिम खेती** और **बागवानी शुरू** हुई।
  - **पालतू** बनाने वाला **पहला जानवर** - **कुत्ते** का **जंगली पूर्वज।**
  - **भेड़** और **बकरियां**- **सबसे आम पालतू** जानवर।
  - **लोग गुफाओं** और **खुले मैदानों** के साथ-साथ **अर्द्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे**।
  - **लोग परलोक में विश्वास करते थे** और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों के साथ दफनाते थे ।
  - **लोग जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनने लगे।**
  - इस अवधि में **गंगा के मैदानों का पहला मानव उपनिवेश स्थापित** हुआ ।
  - **अंतिम चरण** - खेती की शुरुआत
- **औजार - सूक्ष्म पाषाण -**
  - **ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकृतियों** में गूढ़-क्रिस्टली सिलिका, कैल्सेडनी या चर्ट से बने ।
  - **मिश्रित औजार**, **भाला**, **तीर** और **दरांती** बनाने **के लिए उपयोग** ।
  - ये **औजार छोटे जानवरों** और **पक्षियों का शिकार** करने में सक्षम बनाते थे।
- **चित्र** -
  - **कला प्रेमी** और **इतिहास** में **रॉक कला/ शैल चित्रकला की स्थापना** की।
  - **भारत में पहली शैल चित्र** - 1867 में सोहागीघाट (उत्तर प्रदेश) में मिली।
  - **विषयवस्तु**- जंगली जानवर और शिकार के दृश्य, नृत्य और भोजन संग्रह।
  - **चित्रकला में ज्यादातर लाल गेरू** लेकिन कभी-कभी **नीले-हरे, पीले या सफेद रंगों का इस्तेमा**ल किया गया है।
  - **सांपों का** कोई **चित्रण नहीं**।
  - **भीमबेटका शैल चित्र धार्मिक प्रथाओं** के विकास **के बारे में** एक अंदाजा देते हैं और लिंग के आधार पर श्रम विभाजन को भी दर्शाते हैं। पुरुषों को शिकार करते हुए दिखाया गया है जबकि महिलाओं को संग्रहण करते और खाना बनाते हुए दिखाया गया है।
- **महत्वपूर्ण स्थल** -
  - **बागोर (राजस्थान)-**
    - **भारत में सबसे बड़ा और सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मध्यपाषाण स्थलों** में से एक।
    - कोठारी नदी पर।
    - **पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण।**
  - **महादहा, दमदमा, सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) -**
    - **मानव कंकाल** के साक्ष्य।
    - **महादहा में**, एक **पुरुष** और एक **महिला को** एक **साथ दफनाया** गया था।
    - एक कब्रगाह में **कब्र देवता** के रूप में एक **हाथीदांत का पेंडेंट** पाया गया।
  - **भारत भर में मध्यपाषाण शैल चित्र स्थल-**
    - मध्य भारत जैसे भीमबेटका गुफाएं, खारवार, जौरा और कठोटिया (एमपी), सुंदरगढ़
    - संबलपुर (ओडिशा)
    - एजुथु गुहा (केरल)।
  - **लंघनाज (गुजरात) और बिहारनपुर (पश्चिम बंगाल)-**
    - लंघनाज- जंगली जानवरों (गैंडा, काला हिरण आदि) की हड्डियाँ।
    - कई मानव कंकाल
    - बड़ी संख्या में सूक्ष्म पाषाण

3. नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल

- साधरणतया इस काल की **अवधि 3500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के बीच** मानी जाती है।
- यूनानी भाषा का Neo शब्द नवीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसलिए इस काल को 'नवपाषाण काल' भी कहा जाता है।
- **विशेषताएँ -**
  - **होलोसीन भूवैज्ञानिक युग के अंतर्गत** आता है।
  - **'नियोलिथिक क्रांति'** (वी-गॉर्डन चाइल्ड द्वारा) के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि **इसने मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन** किए।
  - **आदमी खाद्य संग्रहकर्ता से खाद्य उत्पादक बन गया।**
  - **लिंग** और **उम्र के आधार पर श्रम** का **विभाजन**।
- **उपकरण और हथियार-**
  - **परिष्कृत** और घिसे हुए पाषण हथियार ।
  - **उत्तर-पश्चिमी-** घुमावदार धार वाली आयताकार कुल्हाड़ियाँ।
  - **उत्तर-पूर्वी** - आयताकार हत्थे और कभी-कभी कंधे वाले कुदाल के साथ पॉलिश पत्थर की कुल्हाड़ी।
  - **दक्षिणी**- अंडाकार सिरों और नुकीले हत्थे वाली कुल्हाड़ी।
- **कृषि -**
  - **रागी, चना** (कुलती) **और फल** उगाए गए।
  - साथ ही पालतू पशु, भेड़ और बकरियां भी पाले गए।
- **मृदभांड -**
  - **पहले हाथ से बने मृदभांड** देखे गए और फुट व्हील का इस्तेमाल देखा गया।
  - धूसर मृदभांड और पोलिशदार काले मृदभांड और शामिल हैं।
- **आवास-**
  - लोग मिट्टी और घास-फूंस से बने **आयताकार या गोलाकार घरों** में रहते थे।
  - उस समय के मनुष्य **नाव बनाना और कपास और ऊन से कपड़ा बुनना** आता था ।
  - मुख्य रूप से **पहाड़ी नदी घाटियों, शैल आश्रयों और पहाड़ी ढलानों में** बसे हुए थे।

नवपाषाण संस्कृति के दो चरण-
- **एसैरैमिक-** सिरेमिक का कोई सबूत नहीं।
- **सेरैमिक-** मिट्टी के बर्तनों, घरों, तांबे के तीरों, काले मृदभांडों , चित्रित मृदभांडों के साक्ष्य।

महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल

- **कोल्डीहवा (प्रयागराज के दक्षिण में स्थित)** – अपरिष्कृत हस्त निर्मित मृदभांडों के साथ गोलाकार झोपड़ियों का प्रमाण।
- **महागरा -** विश्व में चावल की खेती का सबसे प्राचीन प्रमाण।
- **मेहरगढ़** (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) - सबसे पुराना नवपाषाण स्थल, जहां लोग धूप में सुखाई गई ईंटों से बने घरों में रहते थे और कपास और गेहूं जैसी फसलों की खेती करते थे।
- **बुर्जहोम** (कश्मीर) - घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ उनकी कब्रों में दफनाया जाता था, लोग गड्ढों में रहते थे और परिष्कृत पाषाणों और हड्डियों से बने औजारों का इस्तेमाल करते थे।
- **गुफकराल** (कश्मीर) - शाब्दिक अर्थ "कुम्हार की गुफा"। यह नवपाषाण स्थल लोगो द्वारा गड्ढे में रहने, पत्थर के औजारों और कब्रिस्तानों के लिए प्रसिद्ध है।
- **चिरंद** (बिहार) - सींगों से बने हड्डी के औजार।
- **नेवासा -** सूती कपड़े के साक्ष्य।
- **पिकलीहाल, ब्रह्मगिरि, मस्की, टक्कलकोटा, हल्लूर (कर्नाटक) -** राख के टीले की खोज।

विन्ध्य की बेलन घाटी में **चोपानी मांडों** और **नर्मदा घाटी** के **मध्य भाग** में, **तीनों चरणों** (पुरापाषाण से नवपाषाण तक) **के साक्ष्य** पाए गए हैं- इस स्थल से **पशु अस्थि जीवाश्मों की खोज** भी हुई है।

3 CHAPTER ताम्र-पाषाणिक काल (3000-500BC)

- जिस काल में मनुष्य ने **पत्थर और तांबे के औज़ारों का साथ-साथ प्रयोग** किया, उस काल को 'ताम्र-पाषाणिक काल' कहते हैं।
- **सर्वप्रथम** जिस **धातु** को औज़ारों में प्रयुक्त किया गया वह थी – **'तांबा'।**
- ऐसा माना जाता है कि **तांबे का सर्वप्रथम प्रयोग क़रीब 5000 ई.पू. में किया गया।**

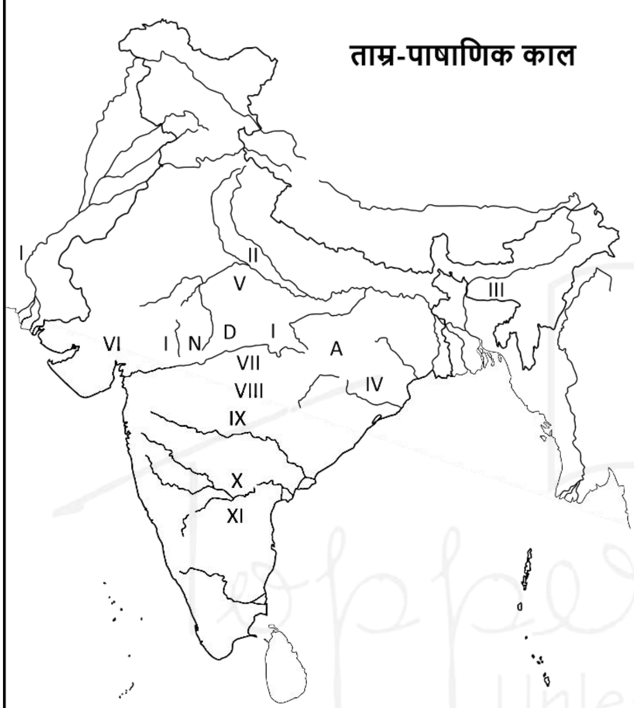

निम्नलिखित ताम्रपाषाण स्थलों को क्षेत्रवार दिखाया गया है:
I. सिंधु प्रणाली
1. मोहनजोदडो 2. हड़प्पा 3. रोपड़ 4. सूरतगढ़
5. हनुमानगढ़ 6. चन्हू-दड़ो 7. झुकर 8. आमरी
II गंगा प्रणाली
1. कौशाम्बी 2. आलमगीरपुर
III. ब्रह्मपुत्र प्रणाली
IV. महानदी प्रणाली
V. चंबल प्रणाली
1. पसेवा 2. नागदा 3. परमार-खीरी 4. तुंगनी 5. मेतवा
6. तकराओदा 7. भीलसुरी 8. माओरी 9. घट-बिलोद 10. बेतवा
11. बिलावली 12. अष्ट
VI. राजपूताना सौराष्ट्र
पत्थरन
जांबे का चरण
1. रंगपुर 2. आहर 3. प्रशास पाटन 4. लखबावल 5. लोथल 6. पिठाड़िया
7. रोजड़ी 8. अकोट
VII. नर्मदा प्रणाली
1. नवदटोली 2. महेश्वर 3. भगतराव 4. तेलोद 5. महगाम 6. हसनपुर
VIII. तापी प्रणाली
1. प्रकाश 2. बहली
IX. गोदावरी- प्रवर प्रणाली
1. जोरवे 2. नासिक 3. कोपरगांव 4. नेवासा 5. दमाबाद
X. भीम प्रणाली
1. कोरेगांव 2. चंदोली 3. उम्ब्रज 4. धनेगांव 5. अनाथी
6. हुंगनी 7. नागरहल्ली
XI. कर्नाटक
1. ब्रह्मगिरी 2. पिकलीहाल 3. मास्की

Unleash the topper in you

ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेषताएँ

- **पूर्व-हड़प्पा चरण**, हालांकि, हड़प्पा चरण के बाद देश के कुछ हिस्सों में ताम्रपाषाण संस्कृति देखी गई।
- **मुख्य आहार** - मछली और चावल।
- **जली हुई ईंटों का उपयोग नहीं**।
- **मकान**- मिट्टी से बने हुए और गोलाकार या आयताकार।
- **सोने का उपयोग केवल सजावटी उद्देश्यों** के लिए।
- **कपास का उत्पादन** दक्कन क्षेत्र में होता था।
- **लोग बुनाई**, **कताई** और **तांबा गलाने** का अभ्यास करते थे।
- **ताम्रपाषाण बस्तियों के साक्ष्य** -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान,
  - पश्चिमी मध्य प्रदेश,
  - पश्चिमी महाराष्ट्र,
  - दक्षिण और पूर्वी भारत
- **पत्थरों से बने छोटे औजारों और हथियारों का प्रयोग**- पत्थर के ब्लेड और ब्लेडलेट
- **कृष्ण लोहित मृद्पात्र** (बीआरडब्ल्यू) का उपयोग।

ताम्रपाषाण संस्कृति की अन्य विशेषताएँ

1. **मृदभांड**
- **सबसे पहले चित्रित मृदभांडो का उपयोग** किया।
- **चाक पर बने** हुए उत्कृष्ट **मृदभांड**
- **सजावटी उद्देश्यों के लिए** पुष्प, पशु, पक्षी और मछली के **रूपांकनों का उपयोग** किया गया था।

2. **गहने**
- **अर्द्ध-कीमती पत्थरों** जैसे स्टीटाइट, क्वार्ट्ज क्रिस्टल, कारेलियन आदि से बने **मोतियों का निर्माण** किया जाता था।
- **आम गहनों में** पायल, चूड़ियाँ और तांबे के मोती शामिल थे।

3. **औजार**
- आमतौर पर **सिलिसियस सामग्री से बने सूक्ष्म पाषाण उपकरण का उपयोग** किया जाता था।
- हथियारों के लिए **निम्न श्रेणी के कांस्य का प्रयोग**
- **खाद्य प्रसंस्करण के लिए** ग्राइंडर, मिलर और हथौड़े का उपयोग किया जाता था।

4. धार्मिक परम्पराएँ

- **देवी मां की पूजा** की जाती थी।
- **बैल धार्मिक पंथ का प्रतीक** था।
- **प्रजनन पंथ की पूजा** की जाती थी।
- **इनामगाँव** और **नेवादा** में पकी या बिना पकी मिट्टी दोनों से बनी **महिला मूर्तियों की खोज** की गई है
- **मंदिर का** कोई **प्रमाण नहीं।**

5. कृषि

- **काली कपास** मर्दा **क्षेत्र** में ताम्रपाषाणकालीन बस्तियां फली-फूली।
- **खरीफ** और **रबी** दोनों **फसलों** की खेती बारी-बारी से की जाती थी।
- **उगाई जाने वाली फसलें** - जौ, गेहूं, मसूर, काले चने, हरे चने, चावल और हरी मटर।
- **पशुधन** - भैंस, गाय, शिकार किए गए हिरण, बकरियां, भेड़ और सूअर।
- **ऊंट के अवशेष** मिले हैं।
- **हल** या **कुदाल** का कोई **प्रमाण नहीं**
- **छिद्रित पत्थर** की डिस्क और **खुदाई करने की छड़ो** की खोज

6. अंत्येष्टि

- **लोग मृत्युपर्यंत जीवन में विश्वास करते थे।**
- **महाराष्ट्र** में **मृतकों को उत्तर-दक्षिण स्थिति में** घरों के फर्श के नीचे कलशों में **दफनाया** जाता था।
- **पूर्वी भारत** में, **आंशिक अंत्येष्टि** की जाती थी।
- **दक्षिणी भारत** में, **मृतकों** को **पूर्व-पश्चिम स्थिति** में **दफनाया** जाता था।
- **मृतकों को इस दुनिया में लौटने से रोकने के लिए उनके पैर काटे जाते थे।**
- **दैमाबाद** में, **छेद किए हुए पेंदो वाले पांच कलश** मिले हैं।

महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ और उनकी विशेषताएँ

संस्कृति	अवधि	विशेषताएँ	कार्यस्थल
आहड़ संस्कृति	2100-1500 ईसा पूर्व	• सफेद वर्णक आकृतियों वाले काले और लाल मृदभांड • उगाई जाने वाली फसलें- चावल, ज्वार, बाजरा, हरी मटर, मसूर, हरे और काले चने। • पत्थरों से बने मकान मिले	• क्षेत्रीय केंद्र- गिलूण्ड • महत्वपूर्ण स्थल- आहड़ और बालाथल
कयथा संस्कृति	2000-1880 ई.पू.	• भूरे रंग की मोटी धारियों वाले लाल लेपवाले मृदभांड • किलेबंद बस्तियां	• चंबल और उसकी सहायक नदियाँ
मालवा संस्कृति	1700-1200 ई.पू	• काले एवं लाल मृदभांड जिसे मालवा मृदभांड कहा जाता है प्राप्त हुए है • उगाई जाने वाली फसलें - गेहूँ और जौ	• नवदाटोली, एरण, और नागदा - महत्वपूर्ण बस्तियों • नवदाटोली- सबसे बड़ी बस्ती
सावल्दा संस्कृति	2300-2000 ई.पू	• दक्कन में सबसे प्रारंभिक कृषक समुदाय	• महाराष्ट्र में धुले जिला
जोरवे संस्कृति	1400-700 ई.पू	• लाल रंग पर काले रंग से अलंकृत पात्र • टोंटीदार ताँबे के बर्तन मिले	• तापी, गोदावरी और भीम की घाटियाँ • दैमाबाद- सबसे बड़ा स्थल
प्रभास और रंगपुर संस्कृति	2000-1400 ई.पू	• लाल या टेराकोटा / मृणमूर्ति रंग वाले विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन।	

अन्य ताम्रपाषाण स्थल

1. पूर्वी उत्तर प्रदेश

- खैराडीह

2. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान

- गणेश्वर- हड़प्पा पूर्व ताम्रपाषाण संस्कृति को दर्शाता है।
- आहड़ - तांबे के औजारों की बहुतायत, पत्थर की कुल्हाड़ी या ब्लेड अनुपस्थित, प्रगलन और धातु से अवगत थे।

3. पश्चिम बंगाल (चावल के टुकड़े के साक्ष्य)

- महिषादल
- पांडु राजार धिबिक

4. पश्चिमी मध्य प्रदेश (गेहूं और जौ का उत्पादन)

- मालवा- सबसे उत्कृष्ट ताम्रपाषाण मृदभांड यहां खोजे गए हैं।
- कायथ- 29 तांबे की चूड़ियों और दो अनोखी कुल्हाड़ियों की खोज, कार्नीलियन और स्टीटाइट जैसे अर्द्ध-कीमती पत्थरों के हार।
- एरण- गैर-हड़प्पा संस्कृति को दर्शाता है।

5. पश्चिमी महाराष्ट्र

- जोरवे - सपाट, आयताकार तांबे की कुल्हाड़ियों का प्रमाण।
- दैमाबाद - सबसे बड़ा जोरवे सांस्कृतिक स्थल (20 हेक्टेयर), कांस्य माल।
- चंदोली - तांबे की छेनी।
- इनामगाँव - चावल के साक्ष्य, देवी माँ की मूर्तियाँ, ओवन के साथ बड़े मिट्टी के घर और गोलाकार गड्ढे वाले घर।
- नवदातोली - बियर और अलसी के प्रमाण।

6. बिहार

- नरहन
- चिरांद (मछली के काँटे के प्रमाण)

दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृति

महापाषाण (मेगालिथ)

- ग्रीक शब्द – मेगास = महान + लिथोस = पत्थर।
- **बड़े पत्थरों से बने स्मारक।**
- **शब्द का प्रतिबंधित उपयोग** किया गया है और **केवल स्मारकों** या संरचनाओं **के एक विशेष वर्ग के लिए लागू होता है**।
- **महापाषाण स्मारक -** केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र।

महापाषाण संस्कृतियों की उत्पत्ति और प्रसार

- महापाषाण स्मारक - **मनुष्य के सबसे व्यापक अवशेष**।
- **उत्पत्ति** - प्रारंभिक नवपाषाण काल में भूमध्य क्षेत्र- उन व्यापारियों द्वारा ले जाया गया जो अटलांटिक तट से होते हुए पश्चिमी यूरोप में धातुओं की तलाश में गए थे।
- **भारत** - द्रविड़ भाषियों के माध्यम से समुद्र के रास्ते पश्चिम एशिया से दक्षिण भारत पहुंचा।
- **लौह युगीन भारतीय महापाषाण** आमतौर पर **1000 ईसा पूर्व** के हैं।
- **भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन** दो मार्गों से हुआ होगा-
  - ओमान की खाड़ी से भारत के पश्चिमी तट तक
  - ईरान से भूमि मार्ग द्वारा।
- भारत में **मुख्य संक्रेट्रण** - दक्कन (गोदावरी नदी के दक्षिण में)।
- कुछ **सामान्य महापाषाण** प्रकार **उत्तर भारत**, **मध्य भारत** और **पश्चिमी भारत** में पाए जाते हैं। उदाहरण – झारखण्ड में सरायकेला; उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में अल्मोड़ा जिले में देवधूरा और फतेहपुर सीकरी के पास खेरा; नागपुर; मध्य प्रदेश के चंदा और भंडारा जिले; दौसा, राजस्थान में जयपुर से 32 मील पूर्व में।
- **पाकिस्तान** में कराची के पास, हिमालय में लेह और जम्मू-कश्मीर में बुर्जहोम में भी पाया जाता है।
- भारत के **दक्षिणी क्षेत्र** में व्यापक वितरण- अनिवार्य रूप से एक दक्षिण भारतीय विशेषता।

महापाषाण संस्कृति के विभिन्न पहलू

<u>समाज</u>

- बड़ी **ग्रामीण** आबादी।
- **मकान - छप्पर वाली झोपड़ियाँ**, जो लकड़ी के खम्भों पर टिकी होती हैं।
- **हल की खेती** का प्रसार- **गहन खेती।**
- **प्रमुख जल संसाधनों से 10- 20 किमी की दूरी के भीतर** ग्राम पारगमन।
- **नदी घाटियों** और **काली मिट्टी, लाल रेतीली-दोमट मिट्टी** क्षेत्रों में **अधिकतम** संकेन्द्रण।
- **वर्षा**- 600-1500 मिमी।
- **स्मारक आकार** और **कब्र** की मूल्यवान वस्तुओं की प्रकृति में अंतर था जिससे **वर्ग विभाजन** का पता चलता हैं।

<u>धार्मिक विश्वास और व्यवहार</u>

- **मृतकों के लिए पूजा** की जाती थी।
- **मृत्युपर्यंत जीवन** में **विश्वास करते थे** अतः कब्र में सामान भी दफनाया जाता था।
- **पालतू जानवरों को** भी **दफनाया** जाता था।
- महापाषाणों में पशु, भेड़/बकरी जैसे घरेलू जानवरों और भेड़िये जैसे जंगली जानवरों की हड्डियों के होने से जीववाद में विश्वास स्पष्ट होता है।

<u>राजनीति</u>

महापाषाणकालीन कब्र -

- महापाषाणकालीन लोगों ने **विस्तृत और श्रमसाध्य मकबरों का निर्माण** किया।
- **मृत्युपर्यंत जीवन में विश्वास।**
- **कब्र में लकड़ी का सामान,** मिट्टी के बर्तन; हथियार, लोहा, पत्थर या तांबे के औजार; टेराकोटा, अर्द्ध-कीमती पत्थर, खोल, आदि गहनों में, कभी-कभार कान या नाक के गहने, बाजूबंद या कंगन और हीरे पाए जाते थे।
- **भोजन** - धान की भूसी और कुछ अन्य अनाज पिरोए हुए।
- **कब्रों में जानवरों के कंकाल के अवशेष** भी मिले हैं।

- लोग **आदिवासी** वंश के थे- मुखियाओं का प्रचलन।
- मुखिया को पेरूमकान कहा जाता था।
- अपने **कबीले के संपूर्ण व्यक्तिगत**, **भौतिक** और **सांस्कृतिक संसाधनों की कमान** उनके हाथ में होती थी।
- **शक्ति का वितरण** - सरल और **कोई पदानुक्रम नहीं।**
- **छोटे मुखिया सह-अस्तित्व** में रहते थे और एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते थे।
- मुखियाओं के लिए विशेष समाधि।

प्रागैतिहासिक कालीन संस्कृति एवं विशेषताएँ

काल	संस्कृति के लक्षण	मुख्य स्थल	महत्व उपकरण एवं विशेषताएँ
निम्न पुरापाषाण काल	शल्क, गंडासा, खंडक, उपकरण, संस्कृति	पंजाब, कश्मीर, सोहन घाटी, सिंगरौली घाटी, छोटा नागपुर, नर्मदा घाटी, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	हस्त कुठार एवं वाटिकाश्म उपकरण, होमो इरेक्टस के अस्थि अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुए हैं
मध्य पुरापाषाण काल	खुरचनी, वेधक संस्कृति	नेवासा (महाराष्ट्र), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश) नर्मदा घाटी, बाकुंडा, पुरुलिया (पश्चिम बंग)	फलक, बेधनी, भीमबेटका से गुफा चित्रकारी मिली है।
उच्च पुरापाषाण काल	फलक एवं तक्षिणी संस्कृति	बेलन घाटी, छोटा नागपुर पठार, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	प्रारंभिक होमोसेपियंस मानव का काल, हार्पून, फलक एवं हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
मध्य पाषाण काल	सूक्ष्म पाषाण संस्कृति	आदमगढ़, भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बागोर (राजस्थान), सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	सूक्ष्म पाषाण उपकरण बढ़ाने की तकनीकी का विकास, अर्धचंद्राकार उपकरण, इकधार फलक, स्थाई निवास का साक्ष्य पशुपालन।
नवपाषाण काल	पॉलिश्ड़ उपकरण संस्कृति	बुर्जहोम और गुफ्कराल लंघनाज(गुजरात), दमदमा (कश्मीर), कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश), चिरौंद (बिहार), पौयमपल्ली (तमिलनाडु), ब्रह्मगिरि, मस्की (कर्नाटक)	प्रारंभिक कृषि संस्कृति, कपड़ा बनाना, भोजन पकाना, मृदभांड निर्माण, मनुष्य स्थाई निवास बना, पाषाण उपकरणों की पॉलिश शुरू, पहिया, अग्नि का प्रचलन।

Toppersnotes Unleash the topper in you

4 CHAPTER सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- **दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।**
- **मेसोपोटामिया** और **मिस्र** की सभ्यताओं के **समकालीन।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप** के **उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित**।
- **1853** - ए कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
- **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्विक स्थल)। इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- मूलतः एक **नदी सभ्यता।**
- **कांस्य युगीन सभ्यता।**
- इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है** क्योंकि **सर्वप्रथम 1921** में **पाकिस्तान के** शाहीवाल जिले के **हड़प्पा नामक स्थल** से **इस सभ्यता की जानकारी** प्राप्त हुई।

विद्वानों के विचार	उत्पत्ति
ई.जे.एच. मकाय	सुमेर (दक्षिणी मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवास के कारण
डीएच गॉर्डन और मार्टिन व्हीलर	पश्चिमी एशिया से लोगों के प्रवास के कारण
जॉन मार्शल और वी. गॉर्डन चाइल्ड	मेसोपोटामिया सभ्यता का एक उपनिवेश जिसका विदेशी मूल था
एस. आर. राव और टी. एन. रामचंद्रन	आर्यों द्वारा निर्मित
स्टुअर्ट पिगट और रोमिला थापर	ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पन्न
डीपी अग्रवाल और अमलानंद घोष	ईरानी-सोठी संस्कृति से उत्पन्न

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी**
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)

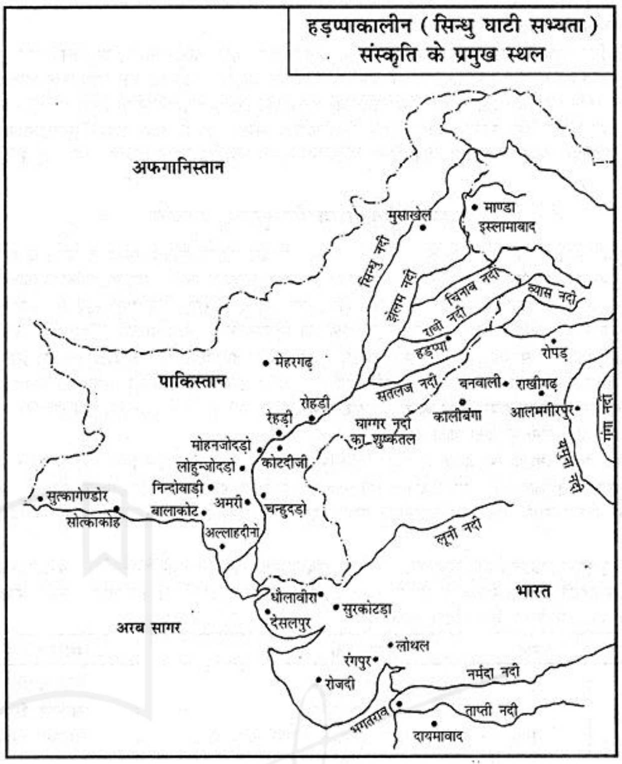

हड़प्पा सभ्यता के चरण

1. प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
- एक आद्य-शहरी चरण।
- गांवों और कस्बों का विकास देखा गया।
- विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
- फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
- स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
- सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

2. परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
- सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

3. उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
- स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आदि।

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारो की दो पंक्तियाँ। • यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले • ताबूत शवाधान • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा • तांबे की बैलगाड़ी • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक • कांस्य के बर्तन। • गढ़(उठे हुए भू भाग पर) • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार (आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा • देवी माँ की मुहर • योगी की मूर्ति • पशुपति मुहर • दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति • मेसोपोटामिया की मुहरें • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बंटा हुआ • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) • चावल की भूसी के साक्ष्य • दोहरा शावाधन • अग्नि वेदियां • जहाज का टेराकोटा मॉडल • माप के लिए हाथीदांत का पैमाना • फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप • बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल • कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियां • पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग • कुओं वाले घर • जल निकासी व्यवस्था नहीं • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते है
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली • तूफानी जल निकासी व्यवस्था • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख)

		• 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।
रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य
बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण • हल का टेराकोटा मॉडल • कोई जल निकासी प्रणाली नही • जौ के दाने • लापीस लाजुली (राजवर्त) • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल • एक छिन्न हुई महिला आकृति
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान • भांड शवाधान • अंडाकार कब्र
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य • अंडाकार गर्त शवाधान • ताम्बे की कुल्हाड़ी
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई तांबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी)

सनौली-

2005 में सनौली उत्खनन 1.0

- 116 कब्रों की खोज की गई।
- **ताम्रपाषाण काल में भारत के सबसे बड़े ज्ञात कब्रिस्तान में से एक के रूप में संदर्भित।**
- **शवाधान** सिंधु घाटी सभ्यता से **अलग** हैं।
- **शरीर के पास व्यवस्थित फूलदान**, **कटोरे** और **बर्तन।**
- **सैनिकों के शवों** के साथ **दबे बर्तनों में चावल** के साक्ष्य मिले।
- **8 एंथ्रोपोमोराफिक आंकड़े** (कुछ ऐसा जो इंसानों जैसा दिखता है)।
- मानवरूपी आकृतियाँ मिली।

2018 में सनौली उत्खनन 2.0

- **2018** में फिर से **प्रकाश में आया** जब एक **किसान ने खेत की जुताई करते समय** जमीन में **पुरावशेष** पाए जाने **की सूचना दी।**
- **घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ** (लगभग 5000 वर्ष पुराने) पाए गए।
- **तांबे की तलवार, युद्ध ढाल** आदि जैसे कई हथियार **पाए गए**।
- इस बार **मृदभाण्डों** के साथ **लकड़ी के चार पैरों वाले ताबूत**
- **जानवरों को काबू करने के लिए चाबुक** मिला है, जिसका अर्थ है कि यहाँ रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- **महिला** + **पुरुष योद्धा** भी तलवारों के साथ दबे पाए गए हैं।
- हालांकि **दफनाने से पहले उनके टखनों के नीचे के पैरों को काट दिया गया था**।

मृदभाण्ड:

- **गैरिक मृदभांड** (OCP) संस्कृति।
- **उत्तर परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के समान** लेकिन कई अन्य पहलुओं में इससे अलग है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

1. **नगर नियोजन-**
   - **किलाबंधित**
   - **सुनियोजित सड़कें**
   - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
   - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
     - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
     - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
   - **हड़प्पा** और में **मोहनजोदाडो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)